कोविड-19 के उपचार के लिए आयुर्वेद और योग पर आधारित राष्ट्रीय नैदानिक प्रबंधन प्रोटोकॉल

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

1. क्या कोई पारंपरिक दवाइयां या उपचार हैं जो कोविड-19 को ठीक कर सकते हैं

उत्तर: कुछ पारंपरिक अथवा घरेलू उपचार हैं जो कोविड-19 के कुछ लक्षणों में राहत पहुंचा सकते हैं और उन्हें कम कर सकते हैं।

तथापि यह दोहराया जाता है कि नैदानिक प्रबंधन प्रोटोकॉल में प्रस्तावित उपाय उपचार नहीं हैं, परंतु कोविड-19 के लक्षण रहित और हल्के लक्षणों वाले मामलों में उपचार तथा रोगनिरोधी देखभाल के लिए है। इन उपायों को करके हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि हम सुरक्षित हो गए हैं। कोविड-19 की रोकथाम के लिए सरकार द्वारा जारी सामान्य दिशा-निर्देशों का पालन करना ही श्रेयस्कर है जिनमें उचित शारीरिक दूरी बनाए रखना, मास्क ठीक से पहनना, स्वच्छता बनाए रखना, भीड़भाड़ वाली जगहों पर जाने या अनावश्यक बाहर जाने से बचना शामिल है और इनका सही तरीके से पालन किया जाना चाहिए।

2. आयुर्वेद में शारीरिक रोग-प्रतिरोधक क्षमता क्या है

उत्तर: आयुर्वेद में स्वास्थ्य और रोग प्रबंधन के लिए दोहरे प्रबंधन को शामिल करते हुए रोग-प्रतिरोधक क्षमता/व्याधिक्षमत्व का एक व्यापक दृष्टिकोण है। व्याधिक्षमत्व किसी भी तरह से रोग से लड़ने के लिए शरीर का प्रतिरोध है जो दो तरह से काम करता है; *(क) व्याधि-बल-विरोधित्वम-* किसी रोग की ताकत या गंभीरता या प्रगति को रोकने अथवा उसका सामना करने के लिए शरीर की प्रतिरोधक शक्ति और *(ख) व्याधि-उत्पद-प्रतिबंधकत्वम-* किसी रोग को होने से रोकने के लिए शरीर की प्रतिरोधक शक्ति। आयुर्वेद में उल्लेखनीय रूप से विभिन्न प्रकार के परिवर्तनीय कारकों को सूचीबद्ध किया गया है जो शारीरिक रक्षा प्रतिक्रियाओं *(बल/व्याधिक्षमत्व)* को प्रभावित करते हैं। इन कारकों में स्वस्थ आहार *(पथ्याहार),* जैविक दोषों की स्थिति और शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य *(शरीर)* की स्थिति समाहित हैं। आयुष मंत्रालय द्वारा जारी की

गई पिछली एडवाइजरी इस शारीरिक रक्षा तंत्र या सैल्यूटोजेनिसिस पर आधारित है और विशेषज्ञ समीक्षित तथा अनुक्रमित प्रकाशनों से उपलब्ध कई प्रयोगसिद्ध साक्ष्यों पर भी आधारित है।

3. शारीरिक रक्षा प्रणाली को मजबूत करने में रसायन का क्या महत्व है

उत्तर: आयुर्वेद ने "रसायन" शब्द के अंतर्गत शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए जड़ी-बूटियों, औषध योगों और उपचारों के एक समूह की परिकल्पना की है जिसका उद्देश्य विशिष्ट औषधीय जड़ी-बूटियों, औषधयोगों और कुछ विशिष्ट आचार संहिता के माध्यम से बल, जीवनशक्ति, दीर्घायु, स्मृति, बुद्धि, यौवन व शरीर एवं इंद्रियों की इष्टतम शक्ति को बढ़ाकर *रसादि धातु* का इष्टतम स्तर प्राप्त करना है। इन जड़ी-बूटियों और उनके पादप घटकों पर पब्लिक डोमेन में विभिन्न क्रियाकलापों जैसे इम्यूनोमॉड्यूलेशन, एंटीऑक्सीडेंट क्रियाकलाप, स्नायु क्षय संबंधी विकार, कायाकल्प और पोषक खुराक के बारे में विविध वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध हैं।

4. कोविड-19 के उपचार के लिए आयुर्वेद और योग पर आधारित राष्ट्रीय नैदानिक प्रबंधन प्रोटोकॉल किसने तैयार किया है

उत्तर: मंत्रालय ने 'राष्ट्रीय नैदानिक प्रबंधन प्रोटोकॉल: कोविड-19' में आयुर्वेद और योग उपचारों के एकीकरण के लिए एक अंतःविषयक समिति का गठन किया है जिसकी अध्यक्षता आईसीएमआर के पूर्व महानिदेशक डॉ. वी. एम. कटोच और विशेषज्ञों के समूह ने की।

समिति ने गहन परामर्शी प्रक्रिया के उपरांत संभावित लाभों और साथ ही सुरक्षा को दर्शाने वाले स्वीकार्य प्रयोगात्मक और नैदानिक प्रकाशित आंकड़ों तथा कोविड-19 में चल रहे अध्ययनों से प्राप्त रूझानों के आधार पर अपनी रिपोर्ट और सिफारिशें तैयार की हैं। यह रिपोर्ट स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा गठित कोविड-19 पर राष्ट्रीय कार्य बल और संयुक्त निगरानी समूह दोनों के समक्ष प्रस्तुत की गई थी।

इस रिपोर्ट के आधार पर कोविड-19 उपचार पर राष्ट्रीय कार्य बल ने कोविड-19 के उपचार के राष्ट्रीय प्रोटोकॉल में एक विशिष्ट अध्याय के रूप में शामिल करने के लिए कोविड-19 के उपचार

हेतु आयुर्वेद और योग पर आधारित एक राष्ट्रीय नैदानिक प्रबंधन प्रोटोकॉल तैयार करने का सुझाव दिया था।

उनकी सिफारिशों के आधार पर आयुष मंत्रालय ने अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), दिल्ली, आयुर्वेद में स्नातकोत्तर प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईपीजीटीआरए), जामनगर, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर, केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुंसधान परिषद (सीसीआरवाईएन) और अन्य राष्ट्रीय अनुंसधान संगठनों के विशेषज्ञों से आम सहमति बनाकर यूजीसी के उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में अपने राष्ट्रीय कार्य बल के अध्यक्ष से सिफारिशों की पुनरीक्षा का अनुरोध किया। अंत में कोविड-19 के उपचार के लिए आयुर्वेद और योग पर आधारित राष्ट्रीय नैदानिक प्रबंधन प्रोटोकॉल सभी विषयों के सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञों की मद्द से उपर्युक्त समग्र अभ्यासों के साथ तैयार किया गया।

रिपोर्ट और सिफरिशों में नैदानिक अध्ययन, सुरक्षा अध्ययन और इन-सिलिको अध्ययनों के संदर्भ के साथ विस्तृत वैज्ञानिक तर्क दिया गया है जिसके आधार पर कोविड-19 के लिए उपायों का पुनर्निधारण प्रस्तावित है। यह रिपोर्ट पब्लिक डोमेन में https://www.ayush.gov.in/ पर उपलब्ध है। इस प्रोटोकॉल को पारंपरिक चिकित्सा पद्धति द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रोटोकॉल और औचित्य की तर्ज पर तैयार किया गया है।

5. क्या औषधियों के चयन के पीछे कोई वैज्ञानिक तर्क है

उत्तर: इन औषधियों का चयन प्रकाशित वैज्ञानिक साक्ष्यों, वैज्ञानिक प्रासंगिकता एवं औचित्य द्वारा समर्थित साहित्यिक अनुसंधान, कोविड-19 में इन औषधियों के पुनर्निधारण के समर्थन में वैज्ञानिक प्रासंगिकता एवं तर्क और आयुष मंत्रालय द्वारा पूरे भारत में एक बड़े समूह पर पूरे किए गए तथा चल रहे अध्ययनों के परिणामों और रूझानों पर आधारित है।

6. क्या सुझाई गयी औषधियाँ सुरक्षित हैं

उत्तर : चयनित जड़ी-बूटियाँ भारत में सबसे अधिक इस्तेमाल की जाती हैं तथा उपचार के लिए दी जाती हैं और बिना किसी बड़े गंभीर प्रतिकूल प्रभावों(एसएई) के प्रत्येक पर पर्याप्त संख्या में

नैदानिक अध्ययन हुए हैं और इन्हें लगभग 25000 सरकारी आयुर्वेद पीएचसी में और अनेक नैदानिक दशाओं के लिए एक स्वास्थ्य टॉनिक (रसायन) के रूप में बड़ी संख्या में आयुर्वेद चिकित्साभ्यासियों द्वारा दिया जा रहा है। पब्लिक डोमेन में उपलब्ध वैज्ञानिक जानकारियों की पूर्व नैदानिक और नैदानिक अध्ययनों में उनकी सुरक्षा को प्रमाणित करने के लिए भी जांच की गयी थी। इसके अलावा कोविड-19 से संबन्धित शोध अध्ययनों में आयुष औषधियां एक मात्र तथा आनुषंगिक उपायों के तौर पर बिलकुल सुरक्षित पाई गयी और अधिकांश प्रतिभागियों पर किए गए इन अध्ययनों में जड़ी-बूटी औषधि के बीच कोई परस्पर क्रिया भी नहीं देखी गयी।

7. क्या कोविड-19 के लिए आयुष में कोई शोध कार्य किया गया है

उत्तर : आयुष मंत्रालय ने **कोविड-19** के लिए अनुसंधान अध्ययन (नैदानिक, पूर्व नैदानिक, निरीक्षणमूलक आदि) तैयार करने और योजना बनाने के लिए एक अंतःविषय आयुष अनुसंधान एवं विकास कार्य बल का गठन किया है। आयुष मंत्रालय के तहत अनुसंधान परिषदों और राष्ट्रीय संस्थानों, विश्वविद्यालयों, राज्य सरकारों और कोविड अस्पतालों द्वारा शुरू किए गए अध्ययन काफी हद तक कार्यबल की इनपुट पर आधारित हैं, जिन्होंने जेनेरिक प्रोटोकॉल तैयार किए थे (http://ayush.gov.in पर सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध)। उपर्युक्त एजेंसियों ने नैदानिक, पर्यवेक्षणीय, इन-सिलिको और पूर्व नैदानिक अध्ययन के लिए काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआईआर), इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर), पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया (पीएचएफ़आई), विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) जैसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक संगठनों के साथ सहयोग और परामर्श से देश भर में विभिन्न अध्ययन शुरू किए हैं। वर्तमान में मंत्रालय ने राष्ट्रीय संस्थानों, अनुसंधान परिषदों, विश्वविद्यालयों, राज्य सरकारों और अन्य सहयोगी अस्पतालों द्वारा किए जा रहे 112 स्थानों पर 68 अध्ययन शुरू किए हैं, जिनमें आयुष-सीएसआईआर अध्ययन भी शामिल हैं। इनमें से कई पूरे हो गए हैं और डेटा विश्लेषण किया गया है और अन्य अध्ययन पूरा होने के अंतिम चरण में हैं।

8. मंत्रालय ने किए गए अनुसंधान कार्य की गुणवत्ता कैसे सुनिश्चित की है

उत्तर : इन उपायों की वैज्ञानिक प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए, मंत्रालय ने 2 अप्रैल 2020 को प्रो॰ भूषण पटवर्धन (उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) की अध्यक्षता में एक अंतःविषय आयुष अनुसंधान और विकास कार्यबल (https://www.icssr.org/sites/default/files/Notification%20on/20task%20force002.pdf) का गठन

किया है और इस कार्यबल में प्रतिष्ठित आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली जैसे आईसीएमआर, एम्स, अमृता स्कूल ऑफ आयुर्वेद, एवीपी रिसर्च फाउंडेशन, सीएसआईआर, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) और आयुष अनुसंधान परिषदों के वरिष्ठ वैज्ञानिक और विशेषज्ञ शामिल थे। समिति ने भारत भर से सभी स्टेकहोल्डरों से शोध प्रस्ताव तथा इनपुट आमंत्रित किए और कई परामर्शी प्रक्रियाओं तथा इनपुट की जांच के उपरांत शोध अध्ययनों के लिए कुछ उपायों का प्रस्ताव किया तथा आयुष उपायों के जरिये कोविड-19 पर शोध अध्ययन करने के लिए व्यापक शोध प्रोटोकॉल भी तैयार किए। इस क्रम में, आयुष मंत्रालय ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के साथ एक संयुक्त पहल के तहत आईसीएमआर के तकनीकी सहयोग के अंतर्गत आयुष-सीएसआईआर सहयोगात्मक अध्ययन के तौर पर कोविड-19 में आयुष औषधियों के रोग निरोधी तथा ऍडऑन उपायों पर चार नैदानिक अध्ययनों की योजना बनाई थी। ये अध्ययन एक सशक्त नैदानिक प्रोटोकॉल के तहत चल रहे हैं जिसे आयुष कार्यबल ने तैयार किया है और इसमें प्रतिष्ठित रूमैटोलोजिस्ट तथा शोधकर्ता डॉ अरविंद चोपड़ा, सेंटर फॉर रूमैटिक डिसिजेस (सीआरडी), पुणे ने प्रमुख योगदान किया है।

मंत्रालय ने एक परियोजना निगरानी इकाई के माध्यम से राष्ट्रीय संस्थानों और अनुसंधान परिषदों तथा अन्य सहयोगी अस्पतालों और संस्थानों द्वारा किए जा रहे समस्त अध्ययनों की भी केंद्रीय स्तर पर निगरानी की।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के सदस्यों को लेकर एक केंद्रीय आचार समिति भी गठित की गई थी और उसके बाद समस्त अध्ययनों को समिति के समक्ष रखा गया था ताकि प्रत्येक अध्ययन स्थल पर अध्ययनों की सुरक्षा और वैधता सुनिश्चित की जा सके। अध्ययन शुरू करने से पहले आचार समितियों द्वारा दी गई समस्त जानकारियों और सुझावों पर समुचित रूप से ध्यान दिया गया।

आंकड़ों की सुरक्षा के साथ-साथ प्रतिभागियों की सुरक्षा तथा समुचित अध्ययन संचालन सुनिश्चित करने के लिए आंकड़ा सुरक्षा और निगरानी बोर्ड (डीएसएमबी) भी गठित किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. नंदिनी कुमार, पूर्व उपमहानिदेशक, सिनियर ग्रेड (आईसीएमआर) और उपाध्यक्ष, फोरम फॉर एथिक्स रिव्यू कमेटी इन इंडिया ने की।

9. प्रोटोकॉल में गुडुची की सिफारिश करने का आधार क्या है

उत्तर: गुडुची आयुर्वेद में आम तौर पर सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली जड़ी-बूटियों में से एक है। इस पर अध्ययन किए गए हैं और अध्ययनों में यह पाया गया है कि यह वायरल बुखार में प्रभावी है, शोथ-रोधी है, ज्वर-नाशक है और रोग-प्रतिरोधक शक्ति वर्धक है। तीन इऩ-सिलिको अध्ययन किए गए हैं जिनमें इसकी फैविपिराविर, लोपिनाविर/रिटोनाविर और रेमडेसिविर की तुलना में सार्स-कोविड-2 लक्ष्यों जो वायरस के जुड़ाव और प्रतिकृति में शामिल थे, के विरूद्ध उच्च बाइंडिंग एफिनिटी का पता चलता है। रोग निरोधी परिचर्या के रूप में गुडुची पर आयुष मंत्रालय के अधीन लगभग 7 अध्ययन भी किए जा रहे हैं जिनमें लगभग 1.33 लाख आबादी को शामिल किया गया है और कोविड-19 की रोकथाम में तथा लक्षणरहित कोविड-19 के उपचार में इसके बहुत अच्छे नतीजे सामने आए हैं, वह भी बगैर किसी दुष्प्रभाव के। इसके अलावा, इसे शामिल करने के औचित्य के बारे में विस्तार से राष्ट्रीय नैदानिक उपचार प्रोटोकॉल: कोविड-19 में आयुर्वेद और योग उपचारों को शामिल करने हेतु अंतर-विषयक समिति में बताया गया है जो आयुष मंत्रालय की वेबसाइट पर पब्लिक डोमेन में उपलब्ध कराया गया है।

10.प्रोटोकॉल में अश्वगंधा की सिफारिश का क्या आधार है

उत्तर: अश्वगंधा (विथानिया सोमनीफेरा) (डब्ल्यूएस) उन आयुर्वेदिक औषधीय पादपों में से एक है जिस पर सबसे अधिक व्यापक प्रयोग किए गए हैं और सदियों से आयुर्वेदिक पद्धति में इसका इस्तेमाल होता आ रहा है। अश्वगंधा का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यह रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, तनाव दूर करने और एंटी-वायरल गुणों में कारगर है। इन-सिलिको अध्ययनों में इसको एसीई2- आरबीडी इंटरफेस से उच्च बाइंडिंग एफिनिटी देखी गई है जो कोशिकाओं में सार्स कोविड-2 के प्रवेश को रोक सकता है। लंबे समय तक सामाजिक एकाकीपन में रहने से उत्पन्न तनाव और चिंता को दूर करने में अश्वगंधा (डब्ल्यूएम) की जड़ के अर्क के प्रयोग के बहुत अच्छे नतीजे सामने आए हैं। इसलिए यह रोग निरोधी प्रयोग के लिए एक अच्छी औषधि है। इसके अलावा, यह औषधि फेफड़ों की भी भलीभांति रक्षा करती है और इसलिए कोविड बीमारी के बाद उपचार में लाभदायक है। अश्वगंधा पर कई महत्वपूर्ण अध्ययन किए गए हैं जो

प्रतिष्ठित विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं और इसकी प्रभावकारिता, सुरक्षा, बचाव और सुरक्षात्मक असर को प्रमाणित करते हैं।

11.प्रोटोकॉल में गुडुची और पिप्पली के संयोजन की सिफारिश का आधार क्या है।

उत्तर: आयुर्वेद में गुडुची और पिप्पली के काढ़े का एक ऐसे रोग (वात कफ सन्निपातिक ज्वर) के उपचार के रूप में वर्णन है जिसके कोविड-19 में भी लक्षण दिखाई देते हैं। ये दोनों ही जड़ी-बूटियां आयुर्वेद की नैदानिक पद्धति में बहुत ही आम हैं और विभिन्न श्वसन रोगो में प्रयोग में लाई जा रही हैं। इन दोनों जड़ी-बूटियों और इनके पादप अवयवों पर व्यापक अध्ययन किए गए हैं ताकि इन दोनों की सुरक्षा, रोग-प्रतिरोधक क्षमता, ज्वरनाशक, एंटीवारयल और शोथ-रोधक गुणों की प्रामाणिकता सिद्ध की जा सके। पिपर लोंगम (पिप्पली) और टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया (गुडुची) पर इन-सिलिको अध्ययनों ने इनकी सार्स-कोव-2 (कोविड 19 कारक विषाणु) के संभावित लक्ष्यों से उच्च एफिनिटी को दिखाया है। इसके अलावा, नैदानिक अध्ययन के नतीजों और चल रहे नैदानिक अध्ययनों के अंतरिम रुझानों से कोविड-19 के उपचार में इनकी भूमिका प्रमाणित हुई है।

12.प्रोटोकॉल में आयुष-64 की सिफारिश का आधार क्या है,

उत्तर: आयुष 64 औषधयोग को केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), जोकि आयुष मंत्रालय के अधीन आयुर्वेद अनुसंधान के लिए सर्वोच्च निकाय है, द्वारा एक लंबे वैज्ञानिक अनुसंधान के बाद और तत्पश्चात औषध विकास प्रक्रिया, समस्त नियामक अपेक्षाओं, गुणवत्ता और भेषजसंहिता मानक का पालन करते हुए मलेरिया के लिए विकसित किया गया था। इस औषधि के अवयवों में एंटी वायरल, रोग निरोधी क्षमता वर्धक और ज्वरनाशक गुण मौजूद होने के आधार पर इसका पुनः प्रस्ताव किया गया था। हमने आयुष 64 पर इन-सिलिको अध्ययन किया है जो दर्शाता है कि इसके लगभग 35 पादप-अवयवों में कोविड-19 वायरस के लिए अत्यधिक बाइंडिंग एफिनिटी है। इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी से लड़ने में भी इस औषध योग के आशाजनक परिणाम देखे गए हैं। आयुष 64 पर भारत भर में किए गए लगभग 6 नैदानिक अध्ययनों के बहुत ही आशाजनक रूझान देखे गए हैं। इसके आधार पर और साथ ही इसके

नैदानिक उपयोग और सुरक्षा प्रोफाइल को देख कर ही कोविड-19 परिचर्या के लिए इसकी सिफारिश की गई।

13.समिति ने केवल 4 औषधियों का ही क्यों प्रस्ताव किया ?

उत्तर: यह अंतर-विषयक समिति की पहली रिपोर्ट और सिफारिशें थीं। समिति ने कोविड-19 के राष्ट्रीय नैदानिक उपचार प्रोटोकॉल, प्रोटोकॉल में उपचारों को शामिल करने के औचित्य की समीक्षा की। उसी परिप्रेक्ष्य में मौजूदा आयुर्वेद उपचारों का विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके व्यापक वैज्ञानिक साक्ष्यों, जैसे पूर्व नैदानिक अध्ययन, सुरक्षा और विषाक्तता अध्ययन, नैदानिक अध्ययन तथा एक बड़ी आबादी पर पर्याप्त संख्या में अध्ययनों के अंतरिम रुझानों के आधार पर योग उपचारों के अलावा आरंभ में 4 उपचारों का पुनः प्रस्ताव किया गया था। तथापि, सिद्ध, यूनानी, होम्योपैथी, सोवा-रिग्पा से अन्य आयुष उपचारों के वैज्ञानिक आकलन और मूल्यांकन पर इसी तरह का कार्य प्रगति पर है और आने वाले समय में राष्ट्रीय नैदानिक उपचार प्रोटोकॉल में शामिल किए जाने की संभावना का पता लगाया जा सकता है।

14.कोविड-19 के लिए मंत्रालय द्वारा कितने अध्ययन किए जा रहे हैं?

उत्तर: वर्तमान में भारत भर में **112** स्थलों पर लगभग **68** नैदानिक और पर्यवेक्षणमूलक अध्ययन किए गए हैं**,** जिनमें से कई अध्ययन पूरे हो चुके हैं और प्रकाशन चरण में हैं और अन्य पूरा होने के अंतिम चरण में हैं। इसके अलावा**,** कोविड-19 रोग में उपचारों की बेहतर समझ के लिए**,** डीएसटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों / अनुसंधान संगठनों के सहयोग से कई पूर्व नैदानिक अध्ययन और मॉलीक्यूलर डॉकिंग अध्ययन भी प्रगति पर हैं।

15.रोगनिरोधी परिचर्या के लिए आयुष में बड़े पैमाने पर क्या कोई अध्ययन किया गया है?

उत्तर: रोगनिरोधी परिचर्या आयुष प्रोटोकॉल का एक प्रमुख हिस्सा है**,** और उसी में इसकी भूमिका को बनाए रखने और समझने के लिए मंत्रालय द्वारा भारत भर में अनुसंधान परिषदों और राष्ट्रीय संस्थानों के माध्यम से एक बड़ी आबादी पर कई अध्ययन किए जा रहे हैं। इनमें

सर्वाधिक उल्लेखनीय है आयुष हस्तक्षेपों के माध्यम से लगभग **20000** नमूना आकार में प्रत्येक परिषद और संस्थान द्वारा भारत भर में अपने दायरे में आने वाले ऐसे संस्थान के माध्यम से पूरे भारत में आयुष उपचारों द्वारा रोगनिरोधी परिचर्या, जिसमें संबंधित अध्ययनों में आयुष उपचारों का अध्ययन किया गया था। इसके अलावा, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली ने दिल्ली पुलिस के 80000 जवानों पर दो माह के लिए एक बहुत ही आशाजनक अध्ययन किया है जिसकी शुरूआत मई माह में की गई थी, और तब से जवानों पर निगरानी रखी जा रही है। अध्ययनों से कोविड-19 के मामलों में कमी आने और प्रतिभागियों में इन्फ्लूएंजा जैसे लक्षणों में एक महत्वपूर्ण स्तर तक कमी लाने तथा जीवन स्तर में सुधार आने के बहुत आशाजनक रुझान सामने आए हैं।

16.आयुष संजीवनी ऐप का उपयोग क्या है, इस ऐप से मंत्रालय को क्या परिणाम मिलते हैं?

उत्तर: आयुष मंत्रालय ने कोविड-19 की रोकथाम में आयुष एडवाइजरी और उपायों की प्रभावशीलता, स्वीकार्यता और उपयोग के प्रभाव आकलन के लिए एक मोबाइल एप्लिकेशन- आयुष संजीवनी विकसित किया था। इस अध्ययन को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली हैं। इस मंच पर प्राप्त लगभग **1.47** करोड़ इनपुट्स ने आयुष उपचारों की व्यापक लोकप्रियता और व्यापक स्वीकार्यता को दर्शाया है।

17.क्या नियमित रूप से आयुष क्वाथ लेना लीवर के लिए हानिकारक है

उत्तर: आयुष क्वाथ सबसे आम जड़ी बूटियों से बना है जो कि रसोई में मसाले के रूप में उपयोग की जाती हैं, जैसे दालचीनी, लवंग, शुंठी और तुलसी। इनका लगभग अधिकांश भारतीय नियमित रूप से उपयोग करते हैं और ये बिल्कुल सुरक्षित हैं। इसके किसी भी प्रतिकूल प्रभाव के संबंध में कोई अध्ययन या रिपोर्ट नहीं है। ये जड़ी-बूटियाँ उष्ण वीर्य (गरम तासीर) हैं और इनका उपयोग किसी व्यक्ति की जरूरत तथा स्वाद के अनुसार मुनक्का या मिश्री के साथ किया जा सकता है। ये तत्व आयुष क्वाथ को बहुत अच्छा एंटीऑक्सीडेंट बनाते हैं। तुलसी जैसे घटक के एंटीवायरल और इम्यूनो मॉड्यूलेटरी गुण शोध अध्ययनों में भलीभांति प्रलेखित हैं।

18.क्या प्रोटोकॉल में उल्लिखित औषधियां रोगनिरोधक क्षमता बढ़ाती हैं

उत्तर: आयुर्वेद स्वास्थ्य पद्धति में रोग उपचार और स्वास्थ्य के संरक्षण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण है जिसमें सालुटोजेनेसिस (इष्टतम स्वास्थ्य और रोग-प्रतिरोधक क्षमता की स्थिति को बनाए रखना) एक प्रमुख पहलू है। चुनी गई औषधियों में इम्युनो मॉड्यूलेटरी प्रभाव होता है यानी वे किसी व्यक्ति की रोग निरोधक क्षमता को प्राकृतिक रूप में लाते हैं। वर्तमान समय में जब बदली हुई जीवन शैली, आहार और तनाव एक सामान्य बात है, प्राकृतिक रोग निरोधक प्रणाली को बनाए रखना बहुत दुर्लभ है और इस प्रकार एक व्यक्ति को संक्रमण और बीमारियों का खतरा होता है। इसलिए एक व्यक्ति के सर्वोत्तम स्वास्थ्य और प्रतिरक्षा स्थिति को संरक्षित करने के लिए आयुर्वेद के एक इम्यूनो माड्यूलेटरी उपाय/साधन, जो एक व्यापक शब्द 'रसायन' में शामिल है, बीमारी को रोकने और रोग के गंभीर अवस्था तक पहुंचने को नियंत्रित करने में बहुत सहायक है। इस शब्द को अत्यधिक सक्रिय इम्यून स्थिति या इम्यून सिस्टम की अस्वाभाविक गतिविधि से जोड़कर भ्रमित नहीं होना चाहिए। (सवाल 2 का उत्तर भी पढ़ें)